



National Journal of Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177

NJHSR 2021; 1(34): 16-18

© 2021 NJHSR

www.sanskritarticle.com

ज्योति प्रसाद गैरोला

शोधच्छात्र,

श्री लाल बहादुर शास्त्री रा.सं.-

विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

संस्कृत वाङ्मय में कुबेर विग्रह विमर्श

ज्योति प्रसाद गैरोला

कुबेर उत्तर दिशा के दिक्पाल है। अथर्ववेद ने इनके लिए यक्षराज विशेषण का उल्लेख किया है।^१ रामायण में वैश्रवण ब्रह्मा के मानस पुत्र और पुलस्त्य के पुत्र कहे गये हैं।^२ महाभारत में ऐसा प्रसङ्ग प्राप्त होता है कि विश्वकर्मा के द्वारा बनाये गये पुष्पक विमान पर कुबेर चलते हैं।^३ वह विमान अनेक पलङ्ग, आसन, माला तथा घोड़ों से भूषित रहता है।^४ कुबेर नरवाहन भी हैं।^५ वे अपने हाथ में कौवेरास्त्र धारण करते हैं।^६ वराह पुराण में इनके जन्म की कथा के विषय में ऐसा कहा गया है कि एक बार ब्रह्मा के मुख से पाषाण वर्षा हुई वर्षा समाप्त होने पर उन पाषाणों से उन्होंने एक दिव्य पुरुष बनाया और उसे धनपति बना कर देव-कोष का रक्षक नियुक्त कर दिया।^७ कुबेर यक्षों के अधिपति स्वीकार किये गये हैं। धन के स्वामी होने के कारण वे धनपति तथा धन कहे जाते हैं। बृहत्संहिता में कुबेर किरीट मुकुट को धारण करने वाले तथा नरवाहन कहे गये हैं।^८ कुबेर को विष्णु-धर्मोत्तर भी नरवाहन कहता है। वे कमल पत्र के समान तथा स्वर्ण, की आभा के सदृश हैं-

(कुबेर उत्तर दिशा क दिक्पाल छन्। अथर्ववेद न यूं तैं यक्षराज क रूपामा यू कू विशेष उल्लेख करी। रामायण मां कुबेर तैं ब्रह्मा कू वैष्णव पुत्र तथा पुलस्त्य का पुत्र कहै गैन। महाभारत मा भी यनी प्रसंग मिली। कि विश्वकर्मा द्वारा वंणयू पुष्पक विमान पर कुबेर चलदू थै। वू विमान अनेक पलंग, आसन, माला तथा घोड़ों से सजयूँ थै। कुबेर आदमी कू वाहन भी छ। वे उन अपणा हाथ मा। अस्त्र भी धारण करदन। वाराहपुराण मां यूंकी जन्म की कथा का वार मां बतायूँ छ। कि एकवार ब्रह्मा क मुख सी दुंगुकी वरखा हवै थै वरख खत्म हवै की वू दुंगू कू एक सुन्दर आदिम कि मूरत बणाई और खजाणकू मालिक बणै तै देवकोष कू चौकीदार वणै क नियुक्त करि दिनी। कुबेर कू यक्षकौ कू सेनापति बर्णगी। रुपया पैसों कू मालिक होण कू कारण धनपति तथा धनद कहै गैन। बृहत्संहिता मा कुबेर कू किरीट मुकुट धारण करन वालू तथा नरवाहन बतायूँ छ: कुबेर कू विष्णु धर्मोत्तर मा नरवाहन बतायूँ छ:। उ कमलपता का समान तथा सोना की तरयूँ दिखैदन।)

कर्तव्य: पद्मपत्रभो धनदो नरवाहन:।

चामीकराभो धनद: सर्वाभरण भूषण:॥^९

यहाँ पर 'पद्मपत्रभो' तथा 'चामीकराभो' दोनों शब्द कुबेर के लिए ही प्रयुक्त हैं। पद्मपत्रभो (अर्थात् लाल कमल की आभा वाले) सम्भवतः उनके वस्त्रों के लिए और चामीकराभो (स्वर्ण की आभा) उनके शरीर के वर्ण के लिए प्रयुक्त हुआ है। क्योंकि "अंशुमद्भेदागम" कुबेर के लिए "रक्ताम्बरधरस्सौम्य"^{१०} कहकर उनके रक्त वस्त्रों की ओर सङ्केत करता है और "तप्तकाञ्चनसङ्शो"^{११} कहकर तपे हुए स्वर्ण के सदृश कुबेर के वर्ण को स्वीकार करता है। विष्णुधर्मोत्तर में स्पष्ट रूप से वर्ण और वस्त्र का उल्लेख नहीं हुआ है। कुबेर का सभी प्रकार के आभूषणों से शरीर सुसज्जित रहता है। अग्निपुराण 'कुबेर मेषसंस्थितम्'^{१२} कहकर मेष को कुबेर का वाहन स्वीकार करता है।

Correspondence:

ज्योति प्रसाद गैरोला

शोधच्छात्र,

श्री लाल बहादुर शास्त्री रा.सं.-

विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

(य खम पद्मपत्रभो तथा चामीकराभो द्वि शब्द कुबेर तैय उपयोग हवैन्। पद्मपत्रभो (अर्थात् लाल कमल की तरऊ दिखन वाल) सम्भवतः उँक कपड़ों तँक और यामीकराभो (सोनेकी आभा या आकार) उक शरीर तँक वर्ण उपयोग हवैहि छः केतेक अशुमदमेदागय कुबेर तँक रक्ताम्बरधरसौम्य बोलिक उक लाल कपड़ों क संकेत प्राप्त होदन। और तसकाञ्चनसङ्शो सोनक समान वर्ण कुबेर कु वर्ण स्वीकारी छः कि सोनकी तरहि दिखैदु विष्णुधर्मोत्तर मा स्पष्ट रूप सी वर्ण और कपड़ों कु उल्लेख नी छ हवयुं। कुबेर का सभी प्रकार का आभूषणों सी शरीर (सुसज्जित) या सजियों रदू। अग्निपुराण मा कुबेरं मेषसंस्थितम् बोलिक मेष कु कुबेर का सवारी, स्वीकारी दिधन छ।)

कुबेर उत्तर दिशा के लोकपाल हैं अतः वे उत्तरी वेशभूषा ही धारण करते हैं। वे चमकता हुआ कवच तथा पेट तक लटकता हुआ हार पहनते हैं। उनके मुख से दो दाढ़ें अथवा बड़े दाँत रहते हैं और बड़ी-बड़ी मूँछें होती हैं। उनके सिर का मुकुट कुछ बायी ओर झुका रहता है। ये चार भुजा वाले, लम्बे उदर वाले हैं और इनका बायाँ नेत्र पीला है।^{१३} अपनी दोनों बायीं भुजाओं में वे शक्ति तथा गदा धारण करते हैं। पैरों में सुन्दर नूपुर रहते हैं जिन पर सिंह के चिह्न बने हैं -

(कुबेर उत्तर दिशा कु लोकपाल छः अत वे उत्तरी वेशभूषा या कटाया कपड़ा पैनदू छः उकु चमकतु कवच अपनु पेट तक लटकयो रदू माला पैनदन। उक मुखमा द्वि दाडी अथवा द्वि बड़ा दाँत रनदन और बड़ी बड़ी मूच होदनी। उँ कुं मुकुट मुडमा थोड़ा बाई तरफ झुकीयूँ रदू। कुबेर जी कि चार हाथ और लम्बू पेटड छ। और बाई आँखू पिगलू रनदू अपणी दू वाई हाथों पर वे शक्ति तथा अस्त्र या हथीयार धारण करदन पैरों मा सुन्दर पैजी पैनदन् जियों पर शेरकु चिन्ह बनायां रनदन।)

गदाशक्ती च कर्तव्ये तस्य दक्षिणहस्तयोः॥
सिंहाङ्कलक्षणं केतुं शिविकामपि पादयोः।
शङ्खपद्मौ निधी कार्यौ सुरुपौ निधिसंस्थितौ॥
शङ्खपद्मान्तनिष्क्रान्तं बदर्व तस्य पार्श्वतः॥^{१४}

कुबेर के समान शङ्ख और पद्म नाम की दो निधियाँ खड़ी रहनी चाहिए। उनके दोनों के मुख कुबेर की ओर रहते हैं, वे देखने में अत्यन्त सुन्दर होती हैं। कुबेर की पत्नी ऋद्धि वर देने वाली हैं और उनकी बायीं गोद में विराजमान रहती हैं। ऋद्धि की दो भुजाएँ रहती हैं। वे बायें हाथ में रत्नों का पात्र धारण किए रहती हैं और दाहिना हाथ कुबेर की पीठ पर रखा रहता है।^{१५}

(कुबेर क समीप शंख और पद्म नाम की द्वि निधि खड़ी रैदेन्। उ

द्वौं कु मुख कुबेर की तरफ रैदुं, उ दिखैण मा बहुत सुन्दर छन् कुबेर की अपणी घरवाली ऋद्धि वरदानं देण वाली छः और वुंकी बाई गोद मा विराजदी छः। ऋद्धि की द्वि भुजा रैदेन्। वा वाई हाथ मां रत्नों की थकुली धारण करदी रैदीं और दौणु हाथ कुबेर कु पीठ मां धरयूँ रैदु।)

दोहद पञ्चमहल स्थान में कुबेर की एक प्रतिमा है। इसमें कुबेर लम्बोदर श्मश्रुयुक्त, प्रदर्शित कियेग ये हैं। दो बड़ी दाढ़ उनके मुख के बाहर निकली है। उनके वक्षःस्थल पर कवच तथा हार शोभित है। प्रतिमा विष्णुधर्मोत्तर में वर्णित रूप से साम्य रखती है।^{१६} मथुरा म्यूजियम में कुबेर की एक प्रतिमा है। इसमें कुबेर एक आसन पर बैठे हैं। उनके दो भुजाएँ हैं। दोहिने हाथ में रत्न पात्र और बायें में शङ्ख है। दाहिना पैर नीचे लटक कर पादपीठ पर रखा है और बायाँ पैर मुड़ा हुआ आसन पर-रखा है। दो प्रतिमाएँ चँवर लिए हुए देव के दोनों ओर उत्कीर्ण हैं।^{१७} खजुराहो में एक कुबेर की आलिङ्गन मूर्ति भी है। जिसमें वे ललितासन मुद्रा में बैठे हैं। वामोत्संग में देवी हैं। चार भुजाओं में से एक भुजा देव का आलिङ्गन कर रही है और देवी का दाहिनी हाथ उनके दाहिने स्कन्ध पर रखा हुआ निम्न प्रसङ्गा को स्पष्ट कर रहा है -

वामोत्सङ्गगता कार्या ऋद्धिर्देवीवरप्रदा
देवपृष्ठगतं पाणिं द्विभुजायास्तुदक्षिणम्॥^{१८}

देवी के समीप एक अनुचर है। पादपीठ पर शङ्ख तथा पद्म निधियाँ हैं।^{१९} ऐसी ही कुबेर की आलिङ्गन मूर्ति ग्वालियर के म्यूजियम में भी है।^{२०}

(दोहद पांच-महल मा कुबेर की एक मूर्ति छ। यीं मूर्ति मा कुबेर लम्बू पेट श्मश्रुयुक्त दिखायां छ। द्वि बड़ी दाढ़ उं क मुख क भैर निकली छन् उं क जिकुड पर कवच और माला सजी छन्। मूर्ति विष्णुधर्मोत्तर मा वर्णित रूप सी साम्य रैदेन। मथुरा संग्राहलय मा कुबेर की एक मूर्ति छ यीं मूर्ति मा कुबेर आसन मा बैठयूँ छः उं की द्वि भुजा छन्। दैण हाथ मां रत्नों की थकुली और बायी हाथ मा शंख छः। दैणु खुट्टू निस्स पादपीठ पर लट्कयूँ रन्दू और बायूँ खुट्टू आसन पर मुडियूँ रदू। द्वि प्रतीमा या (मूर्ति) चँवर ली तँ देव (कुबेर) क दैण बांयी तरफ खडी छन्। खजुराहो मा एक कुबेर की चिपटीं मूर्ति छः जै मा कुबेर जी ललितासन मुद्रा मा बैठ्यां छन्। बायीं तरफ देवी भी छः देवी की चार भुजा मा सी एक भुजा देव पर चिपटी छः और देवी कू दैणु हाथ दैण कन्धा पर रखी क ये प्रसंग तँ स्पष्ट कन्नु छः देवी क नजदीक एक सेवा पाणी कन वालु छः। पाद पीठ पर शंख तथा पद्म निधि (खजाणु) छन् यनी मूर्ति कुबेर की (चिपटी मूर्ति) ग्वालियर क संग्राहलय मा भी उपलब्ध छः बल यनु प्रसंग पुराणों मा मिलदू छः)

संदर्भ ग्रन्थ सूची :-

१. बैनर्जी, जे.एन. - डे.हि.आ, पृ. 337.
२. ए.हि.आ.वा. 2 भा., पृ. 533-35.
३. महा.वन.161/37.
४. महा.सन. 161/23-26.
५. महा.वन. 161/42, वन.168/13.
६. कौबेरमधिजग्राहदिव्यमस्त्रं महाबलः॥ महा.वन. 41/41.
७. राव.गो.ना. - ए.हि.आ.वा. 2 भा. 2, पृ. 533-35.
८. वृ.सं. 58/37.
९. वि.घ. 53/1.
१०. ए.हि.आ.वा.2 भा. 3, पृ. 535-37.
११. वही, पृ. 535-37.
१२. अग्नि पु. 51/15.
१३. लम्बौदरश्चतुर्बाहुर्बामपिङ्गललोचनः।
उदीच्यवेशः कवचीहारमारार्पितोदरः॥
द्वे च दंष्ट्रे मुखे तस्य कर्तव्ये श्मश्रुधारिणः।
वामेन विनता कार्या मौलिस्तरयारिमर्दिनी॥ वि.ध. 53/3-4.
१४. वि.धर्मो. 53/5-6.
१५. वामोत्सङ्गगता कार्या ऋद्धिर्देवीवरप्रदा॥
देवपृष्ठगतं पाणि द्विभुजायास्तु दक्षिणम्।
रत्नपात्रं करे कार्यं वामे रिपुनिषूदनः॥ वि.धर्मो. 53/4-5.
१६. स्मिथ, बी.ए.-हि.फा.आ.इण्डि.ए.सीलो., पृ. 196-99.
१७. सरस्वती, एस.के.सर्वे.इण्डि.स्क., पृ.158 प्ले. 23.
१८. वि.ध. 53/4.
१९. खजुराहो पृ. 24 प्ले. 84.
२०. ठेकोर, यस.आर.- कै.स्क.आर.म्यू.ग्वा., पृ. 160.